आत्माओं नयन खोलो

भारत मे शिव भगवान आए हैं

भोले की बारात जा रही है

महाशिवरात्रि के संदर्भ में शिव की बारात का वर्णन करना भी अति प्रासंगिक हो जाता है। शिव बारात में देव, मानव, गंधर्व, किन्नर, जीव-जन्तु, भूत-प्रेत, सभी सम्मिलित है ऐसा शास्त्रों में वर्णन है। परन्तु आपको यह सुनकर और जानकर अत्यंत हर्ष तथा विस्मय होगा कि आपके प्यारे भोलेबाबा की बारात अब जाने ही वाली है। भाव यह है कि शिव भगवान ही इस सृष्टि के नियंता हैं। वे ही सृजन और विनाश करने वाले हैं। वर्तमान समय संगमयुग में उनका पुनः दिव्य अवतरण हुआ है। अब शीघ्र ही पतित सृष्टि का विनाश होगा परमाणु युद्ध, ग्रह युद्ध, अकाल, महामारी, भूकंप और बाढ़ आदि परिस्थितियों द्वारा शीघ्र ही समस्त मानव आत्माएँ शरीर त्यागकर शिव परमात्मा के साथा पतंगों की तरह अपने मूल निवास परमधाम जाएँगी। इस यथार्थ को शिव बारात के रूप में चित्रिक किया गया है। शिव की बारात जाने ही वाली है। तो आइए! इसमें शामिल होने से पहले और महाविनाश में शरीर त्यागने से पहले, ज्ञान-योग द्वारा हम जन्म-जन्मांतर के पापों से मुक्त हो जाएँ तभी बारात में जाने का आनंद मिलेगा।

अभी गीता-महाभारत की पुनरावृत्ति हो रही हैं

गायन है युद्ध के मैदान में कौरव और पाण्डव के रूप में भाई-भाई एक-दुसरें सें लड़े और उसी युद्ध भूमि में भगवान ने मानव कल्याण हेतु गीता का उपदेश दिया, परन्तु हममें से अधिकाँश इस के सत्य अर्थ को नहीं जानते। अतः सभी को ईश्वर का दिव्य संदेश है कि पुनः महाभारत काल, आ चुका है युद्ध जारी है और गीता ज्ञान दाता परमात्मा शिव श्रीकृष्ण के अंतिम 84वॉ जन्म के शरीर में परकाया प्रवेश कर पुनः अवतरित होकर दिव्य गीता ज्ञान सुना रहे हैं। तद्नुसार संसार के सद्गुणी प्रवृत्ति के लोग पाण्डवों की भाँति है और विषय-विकारी, विर्धमी, दुराचारी लोग कौरवों की तरह है जबकि दोनों ही परमात्मा की संतान भाई-भाई हैं। सिर्फ भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में अच्छाई और बुराई का यह धर्मयुद्ध चल रहा है। विजयी वे ही होगें, जो सच्चाई और ईश्वर को अपना साथी बनाएँगे।

भगवान भग्य बाँटने आए, कहीं कोई छूट न जाए

भोलेनाथ शिव सर्व प्राप्तियों के अखुट भण्डार एवं जन्म-जन्मांतर का भाग्य लुटाने आए हैं। उनके लिए बड़े-छोटे, खरे-खोटे सभी आत्माएँ एक समान है। वे दया के सागर, प्रेम व करूण के सिन्धु परमात्मा सम्पूर्ण जागत का कल्याण करना चाहते है। हर आत्मा को सुखी और सम्पन्न बनाना चाहते हैं। परन्तु यह व्यक्ति की

पात्रता पर है कि वे लोटा भर लेता है या पूरी गागर भर लेता है। यह उसकी योग्यता पर है कि उसकी बुद्धि रूपी पात्र सागर को हप कर लेता है या फूटी और औंधी गागर की तरह सब कुछ छलका देता है। कहा भी जाता है कि भोलेनाथ के भण्डारे भरपूर, काल-कंटक सब दूर। जिन्हें उनका संदेश मिल गया हैं उनका कर्त्तव्य है वो अपने आत्मा रूपी भाइयों को परमात्मा की दिव्य प्राप्ति कराएँ। ताकि कोई प्यासा न रह जाए, कोई भूखा न रह जाए। भगवान के दरबार में आने से कोई छूट न जाए।

फिर मत कहना मालूम न था

शिव परमात्मा ने राजस्व अश्वमेद्य अविनाशी रूद्र गीता-ज्ञान यज्ञ रचा हुआ है। ब्रह्मा मुख से ज्ञान सुनाकर वे आत्माओं को पतित से पावन बना रहे हैं। संस्कारों के परिवर्तन द्वारा धरा पर शीघ्र ही स्वर्णिम संसार आएगा ओर उस दुनिया में कोई भी चल सकता है। परन्तु इस हेतु अपना थोड़ा समय नित्य प्रातः या सांय आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के अभ्यास के लिए अवश्य निकालें। इसका निःशुल्क लाभ आप ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के किसी भी सेवाकेन्द्र पर जाकर ले सकते हैं। समय बहुत कम है क्योंकि अभी सृष्टि का अंतिम समय चल रहा है। जाने किस पल कालों का काल महाकाल आ जाए और महाकालेश्वर शिव महाविनाश का नगाड़ा बजा दें। इसलिए समय रहते पाँच विकारों एवं बुराइयों को त्याग कर सतयुग में चलने की तैयारी कर लीजिए। फिर मत कहना मालूम न था। अतएव महाशिवरात्रि अवश्य मनाएँ, परन्तु साथ-साथ ज्ञान की ज्योति भी जगाएँ। ताकि संसार से हमेशा के लिए अज्ञान एवं पाप की रात्रि का अंत हो जाए तथा स्वर्णिम प्रभात का उदय हो।

आइए! प्रेम के सागर परमात्मा शिव के दिव्य जन्मोत्सव पर हम सभी आपस में एकता और प्रेम के सूत्र में बँध जाएँ और संकल्प करें कि हम सर्व के प्रति सदा शुभ भावना व शुभ दृष्टि रखेंगे, शुभ बोल बोलेंगे, शुभ कर्मो द्वारा सबको सुख देंगे तथा सबका भला करेंगे ताकि शीघ्र ही यह संसार सुखमय स्वर्ग बन जाए।

ओम् शान्ति